मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

सरकार की खड़ताल 3
कट्टरपंथी नहीं चाहते मधुर संबंध 4
'मी टू' ने लिया आंदोलन का रूप 5
मोदी के बुरे दिन 8

वर्ष 31 अंक -43 फ़रीदाबाद 21-27 अक्टूबर 2018 फोन : - 9999595632 2.50 ₹

अभूतपूर्व दशहरा : अधर्म की अधर्म पर जीत!

दशहरा मैदान में दो मंत्रियों की नहीं, दो प्रॉपर्टी डीलरों की लड़ाई बेनकाब

सबसे अनुशासित पार्टी का दम भरने वाली भाजपा के चेहरे पर पुती कालिख

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फ़रीदाबाद : दशहर मैदान एनआईटी में विजयदशमी के दिन केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूर्जर और हरियाणा के उद्योग मंत्री विपुल गोयल गए तो थे रावण को फूंकने लेकिन एक दूसरे की लंका में आग लगाने के बाद लौटे। फ़रीदाबाद के दो प्रॉपर्टी डीलरों की लड़ाई सार्वजनिक रूप से इस तरह बेनकाब होगी, इसका अंदाजा किसी को भी नहीं था। धार्मिक मामलों में भाजपा के नेताओं की बढ़ती गैर जरूरी दिलचस्पी और बदमाशों वाली दखलन्दाजी ने अनुशासन का ढिंढोरा पीटने वाली भारतीय जनता पार्टी के मुंह पर कालिख पोत दी है।

दशहरा या चंदे की लड़ाई

धार्मिक आयोजनों में आने वाली चंदे की रकम हर शहर और हर संगठन के लिए झगड़े की वजह बन रही है। एनआईटी के दशहरा मैदान में होने वाला आयोजन हर साल शांतिपूर्वक होता रहा है। लेकिन इस बार दो गुट आमने सामने आ गए। एक गुट धार्मिक व सामाजिक संगठन है, जिसके प्रधान जोगेंद्र चावला-राधा नरूला हैं। दूसरा गुट राजेश भाटिया का है और वह पूर्व विधायक चंद्र भाटिया का भाई है। ये दोनों भाजपा के विधायक रहे स्व. कुंदन लाल भाटिया के पुत्र हैं। दशहरा मैदान के आयोजन पर कब्जे को लेकर दोनों गुट आमने सामने आ गए। 18 अक्टूबर को दोनों गुटों का टकराव उस समय हुआ जब लंका दहन होना था। राजेश भाटिया शोभा

यात्रा निकालना चाहता था लेकिन प्रशासन ने अनुमति नहीं दी। लेकिन प्रशासनिक अफसरों के सामने उस समय पसोपेश की हालत हो गई जब जोगेंद्र चावला की ओर से केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूर्जर व बडखल विधायक सीमा त्रिखा और उधर राजेश भाटिया की ओर से हरियाणा के कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल, मीरापुर (यूपी) से भाजपा विधायक अवतार सिंह भड़ाना ने प्रशासन पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। के बाद प्रशासन ने पूरा आयोजन अपने हाथ में ले लिया। लेकिन प्रशासन का न जाने क्या इशारा रहा कि दोनों गुटों ने अपने-अपने दशहरा आयोजन की घोषणा एक ही जगह के लिए कर दी।

दशहरा मैदान में एक ही मंच पर शुक्रवार को कृष्णपाल गूर्जर और विपुल गोयल, अवतार सिंह भड़ाना आदि अपने-अपने लावलश्कर के साथ पहुंचे। वहां आमना-सामना हुआ तो दोनों नेताओं ने एक दूसरे को खा जाने वाली नजरों से देखा। अपने संबोधन में दोनों नेताओं ने राजनीतिक भाषण दिया। विपुल गोयल ने कहा कि धार्मिक आयोजनों में नेताओं को दखलन्दाजी नहीं करनी चाहिए तो कृष्णपाल गूर्जर ने कहा धार्मिक आयोजनों की आड़ में राजनीति नहीं होनी चाहिए।...अभी रावण ठीक से जला भी नहीं था कि दोनों मंत्री मंच पर ही आमने-सामने हुए और एक दूसरे पर उंगली उठाकर तू-तू - मैं-मैं करने लगे। दोनों ने एक दूसरे पर संगीन आरोप लगाए और कई सारे पुराने आरोप मंच पर ही दोहरा दिए।...सारा तमाशा फ़रीदाबाद की जनता के सामने हो रहा था। अभी कल तक दोनों नेता तमाम सार्वजनिक कार्यक्रमों में छोटा भाई बड़ा भाई कहकर संबोधित करते थे लेकिन शुक्रवार को मंच पर हुए बवाल ने दोनों की पोल खोल दी। ...लेकिन यह लड़ाई कुछ और थी।...दशहरा आयोजन तो बस इस लड़ाई का बहाना बन गया है।

दो प्रॉपर्टी डीलरों की लड़ाई

गूर्जर और गोयल दोनों ही नेता बाद में हैं, प्रॉपर्टी डीलर पहले हैं। विपुल गोयल तो भाजपा का विधायक बनने से पहले ही प्रॉपर्टी डीलिंग के धंधे में थे। गूर्जर ने धीरे-धीरे विकास किया है। पहले चौधरी देवीलाल की रैली में दरी बिछाते थे, फिर भाजपा में आए तो अपने टूटे स्कूटर पर मौजूदा प्रधानमंत्री और पुराने संघ प्रचारक नरेंद्र मोदी को घुमाते रहे। इस शख्स ने केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज के जरिए भाजपा में घुसपैठ की और गूर्जर नेता के लिए तरस रही भाजपा में अपना मुकाम बना लिया। मंत्री बनने के बाद फरीदाबाद के कुछ नामी प्रॉपर्टी डीलरों ने इसे धंधा करना सिखाया और अब यह शहर का सबसे बड़ा प्रॉपर्टी डीलर और नेता है।

बताया जाता है कि विपुल गोयल को भाजपा का टिकट गूर्जर ने दिलाया। लेकिन विपुल गोयल को भाजपा टिकट तभी मिला, जब विपुल की लक्ष्मी जी ने भाजपा को मोहित कर दिया। भाजपा में आने के बाद गोयल को लगा कि वह ठगा गया है और बिना अपनी अलग पहचान बनाए वह कृष्णपाल को चुनौती नहीं दे सकता। उसने मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को पटाया और मंत्री पद हासिल कर लिया। मंत्री बनने के बाद विपुल गोयल के सुर बदल गए और इसके बाद दोनों गुटों में शहर में जमीन के तमाम टुकड़ों और सोसाइटी को लेकर टकराव होने लगा। कुछ दलालों ने दोनों के बीच दिल्ली और फरीदाबाद में बैठकें करा कर समझौता कराना चाहा लेकिन गूर्जर ने झुकने से मना कर दिया। गूर्जर का कहना था कि मैं इसे भाजपा में लेकर आया, टिकट दिलाया लेकिन अगर मुझे ही यह शख्स आंख दिखाएगा तो सहन नहीं होगा।

शहर के दलाल ज्यादा तेज हैं

शहर के तमाम दलालों को इनकी लड़ाई रास आने लगी। दलाल दोनों तरफ से खीर पूड़ी उड़ा रहे हैं। शहर में अगर किसी को आयोजन करना होता है तो वह विपुल गोयल को पकड़ता है और वहां गूर्जर के बारे में तमाम बातें और गालियां दी जाती हैं। गोयल के यहां से उस संगठन या व्यक्ति को चंदा मिलता है, वह लेकर आ जाता है। इसी तरह दूसरा गुट कृष्णपाल गूर्जर के पास पहुंचता है और वही सब बातें विपुल गोयल

शेष पेज दो पर

गुड़गांव-फ़रीदाबाद में तैनातियों की नीलामी का दौर

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

पिछले दिनों भारतीय जनता पार्टी के मालिक एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघ चालक मोहन भागवत फ़रीदाबाद, पानीपत व सोनीपत आदि के दौरे पर आये थे। इस दौरान राष्ट्रीय राजमार्ग एक पर स्थित पट्टी कल्याणा नामक समालखा कस्बे का क्षेत्र उन्हें कुछ ज़्यादा ही भा गया। वैसे वह स्थान प्राकृतिक चिकित्सा के लिये पहले से ही काफ़ी मशहूर है। मोहन भागवत ने यहां आरएसएस भवन निर्माण कराने का निर्णय लिया है।

विदित है कि इन लोग़ों के भवन कोई साधारण तो होते नहीं, इनकी भव्यता को दिल्ली में अभी-अभी बने भाजपा मुख्यालय से समझा जा सकता है। करोड़ों की संभावित लागत से बनने वाले इस भव्य भवन के लिये धन जुटाने का कार्य गुड़गांव के किसी जिंदल नामक बड़े संघी को सौंपा गया है। इसके लिये उन्हें गुड़गांव, फ़रीदाबाद, सोनीपत व पानीपत नाम के चार ज़िलों में अपनी पसंद के अधिकारी तैनात कराने की छूट दी गयी है। इस सम्बंध में संघ प्रचारक से मुख्यमंत्री बने खट्टर को आवश्यक निर्देश जारी कर दिये गये हैं।

छोटे-मोटे अधिकारियों के साथ-साथ ज़िलों के प्रमुख अधिकारियों की पोस्टें नीलामी में रख दी गयी हैं। अभी तक उपलब्ध जानकारी के अनुसार पुलिस कमिश्नर (सीपी) गुड़गांव की तैनाती का मसला तो सुलझ गया है क्योंकि वहां तैनात केके राव ने जिंदल से हिसाब किताब तय कर लिया है। लेकिन अब मसला रह गया है फ़रीदाबाद के सीपी का। यहां के सीपी अमिताभ सिंह ढिल्लों की छवि एवं कार्यशैली को देखते हुये किसी जिंदल या खट्टर की हिम्मत नहीं जो उनसे किसी हिसाब-किताब की बात कर सके। लिहाजा यहां के लिये नये सीपी की तलाश पूरे जोरों पर है। यहां की बोली लगाने में किसी भी आईजी को दिक्कत यहां के दो मंत्रियों कृष्णपाल गूजर व विपुल गोयल-में संतुलन साधने की है। जिस कृष्णपाल ने हनीफ़ कुरैशी के 23 महीने में पूरे ज़िले को अकेले व निरंकुश चरा हो, वह किसी और से हिस्सा कैसे बंटा सकता है ?

पर्दे के पीछे से आ रही खबरों पर यदि भरोसा किया जाय तो कृष्णपाल, यहां ज्वायंट सीपी रह चुके संजय कुमार को लाना चाहते हैं तो इसकी काट के तौर पर विपुल सुभाष यादव का नाम आगे कर देते हैं। विपुल की सुभाष यादव में बेशक कोई रुचि नहीं है और वे यह भी जानते हैं कि उन्हें यहां किसी कीमत पर नहीं लगाया जायेगा; परन्तु वे यादव का नाम केवल गूजर के खिलाफ़ एक मोहरे के तौर पर ही कर रहे हैं। समझा जा रहा है कि 25 अक्तूबर के बाद पुलिस विभाग में कई महत्वपूर्ण फ़ेर-बदल होंगे।

मनबीर सिंह को पानीपत का एसपी जिंदल पहले ही लगवा चुके हैं, इसलिये वहां तो सौदा पहले से ही फ़िट है।

लोकसभा चुनाव में बहुत कम समय रह जाने के चलते संघ व भाजपा को इसी अवधि में उक्त संघ भवन के लिये आवश्यक धन जुटाना है क्योंकि चुनाव के बाद जो होना है उन्हें मालूम है। इन हालात में वसूली की रफ़्तार तेज की जायेगी। थाने व तहसील तथा अन्य लूट कार्यालयों की नीलामी बहुत ऊंची दरों पर होने वाली है।

धर्म की दोगली राजनीति करने में खट्टर और येचुरी एक समान

मजदूर मोर्चा विशेष

हरियाणा में भाजपा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने करनाल के असंद में डाचर गाँव के गुरूद्वारे में जाने से इसलिए इंकार कर दिया कि वहां आतंकवादी जरनैल सिंह भिंडरावाले की तस्वीर लगी है। जबकि करनाल में ही कई खट्टर के करीबी सिख समुदाय के लोग भिंडरावाले को संत का दर्जा देते घूम रहे हैं।

अगर खट्टर में वाकई दम है तो इस गुरूद्वारे और अपने इन समर्थकों के विरुद्ध देशद्रोह का मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्यवाही क्यों नहीं करते ? अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में भी भिंडरावाले की तस्वीर लगी है। वहां तो दस वर्ष तक भाजपा ने अकाली दल के साथ सरकार चलायी लेकिन यह सवाल नहीं उठाया।

खट्टर को यह भी बताना चाहिए कि उनके दो मंत्री, रामबिलास शर्मा और अनिल विज बलात्कारी हत्यारे राम रहीम के दरबार में कैसे जाते रहे थे ? गत विधान सभा चुनाव जीतने के बाद भाजपा के 30 विधायकों को लेकर राम रहीम के दरवाजे पर मत्था टेकने भाजपा का महासचिव कैलाश विजयवर्गीय कैसे गया था ? राम रहीम को संत कहने वाले इन भाजपाइयों के विरुद्ध देशद्रोह का मुकदमा क्यों नहीं बनता ?

उधर केरल के सबरीमाला मंदिर में स्त्रियों के प्रवेश पर रोक की तुलना, हिन्दुत्ववादी चैनल और संगठन मंदिर में जूता पहनकर प्रवेश न करने की प्रथा से कर रहे हैं। जाहिर है, उनके लिए स्त्री की हैसियत जूते वाली ही होगी । केरल में कांग्रेसी भी, बेशक यह न कहते हुए भी, परंपरा के नाम पर भाजपाइयों की तरह ही इस मंदिर में स्त्री प्रवेश के विरुद्ध पैंतरेबाजी में लिप्त दिखे। लानत है!

इस प्रकरण में सबसे दोगला स्टैंड सीपीएम के महासचिव येचुरी और सीपीआई के तमाम प्रवक्ताओं का रहा। वे मोदी सरकार को चुनौतीनुमा सलाह देते नहीं थके कि अध्यादेश लाकर मंदिर में स्त्रियों का प्रवेश खोलने के सुप्रीम कोर्ट के निर्देश को उलट दो। उनकी राज्य सरकार ने भी सबरीमाला में प्रवेश की इच्छुक महिलाओं के विरुद्ध हिन्दुत्ववादियों की प्रायोजित गुंडागर्दी पर प्रभावी कार्यवाही करने से परहेज रखा। डबल लानत!